''निराला की काव्य संवेदना''

डॉ. रवींद्रनाथ मिश्र

छायावाद कवियों में निराला की काव्य संवेदना का धरातल कतिपय विशेषताओं से युक्त है । इसका कारण है उनका अपना व्यक्तिगत जीवन एवं समसामयिक परिस्थितियाँ । वैसे तो छायावादी कविता का मूल भाव प्रेम है जिसकी अभिव्यक्ति विविध रूपों में हुई है ।

छायावादी कविता का एक मात्र विषय स्वयं कवि है और उसकी एक मात्र वस्तु कवि का व्यक्तिगत जीवन, उसकी व्यक्तिगत अनुभूति या चींजों को लेकर उसकी व्यक्तिगत दृष्टि है । अनेक छायावादी कविताएं कवियों के व्यक्तिगत जीवन प्रसंगों की उपज हैं । प्रसाद जी के 'आँसू', 'मधुप गुनगुनाकर कह जाता' निराला की 'सरोज-स्मृति' पंत की 'ग्रंथि', 'उच्छवास और महादेवी वर्मा के अधिकांश गीतों में उनके जीवन के व्यक्तिगत प्रसंगों और तथ्यों की अभिव्यक्ति पायी जाती है । विवेच्य विषय 'निराला की काव्य-संवेदना' उनकी कविताओं के माध्यम से विविध रूपों में व्यक्त हुई है ।

निराला ने अपने जीवन संघर्षों से उत्पन्न पीड़ा एवं वेदना तथा पराजय बोध को अपनी कविताओं के माध्यम से बार-बार अभिव्यक्ति प्रदान की है । उन्होंने 'सरोज-स्मृति' में लिखा है -

तब भी मैं इसी तरह समस्त
कवि-जीवन में व्यर्थ भी व्यस्त
लिखना अबाध गति मुक्त छंद
पर संपादक-गण निरानंद
वापस कर देते पढ़ सत्वर
दे एक-पंक्ति-दो में उत्तर ।
लौटती रचना लेकर-उदास
ताकता हुआ मैं दिशाकाश,

इस प्रकार उनकी निजी कुण्ठा और हताश जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति 'वन-बेला' कविता में हुई है ।

चल रहा नदी-तट पर करता मन में विचार
''हो गया व्यर्थ जीवन
मैं रण में गया हार !
सोचा न कभी -
अपनो भविष्य की रचना पर चल रहे सभी।
इस तरह बहुत कुछ ।
आया निज इच्छित स्थल पर
मर्माहत स्वर भर ।''

जीवन यात्रा के विविध मार्गों पर चलते हुए निराला ने मूल्यों की लड़ाई लड़ी परंतु हार नहीं मानी । संघर्षों की भयावह गाथा को झेलते हुए निराला में अदम्य उत्साह कूट-कूट कर भरा था फिर भी एकांत के क्षणों में उनका मन रो पड़ता था । 'हताश' कविता में उनके 'जीवन चिरकालिक क्रंदन' को व्यक्त किया गया है तो 'राम की शक्ति पूजा' में राम के रूप में उनकी अपनी वेदना इस प्रकार व्यक्त हुई है कि -

धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध
धिक,साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।

निराला के काव्य में उनके निजी जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति खण्डकाव्य 'तुलसीदास' में तुलसी के रूप में हुई है । जहाँ कामायनी के 'मनु' के रूप में प्रसाद और 'लोकायतन' के वंशी के रूप में पंत की कतिपय जीवनगत विशेषताओं को देखा जा सकता है वहीं पर निराला के व्यक्तिगत जीवन एवं उनके संघर्षों को 'राम' और 'तुलसी' की व्यथा में देखा गया है ।

द्विवेदी युगीन आदर्श एवं उपदेशात्मक कविता से ऊबकर छायावादी कवियों ने प्रेम की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से की, क्योंकि समाज में स्त्री-पुरुष प्रेम की मर्यादा कायम थी । निराला कविताओं में तो इस प्रेम की खुली अभिव्यक्ति हुई है ।

प्रिय-कर-कठिन-उरोज-परस कस कसक मसक गयी चोली
एक वसन रह गयी मंद हंस अधर-दशन अनबोली-
कली-सी कांटे की तोली ।
(गीतिका)

'जूही की कली' कविता में इसका बड़ा सजीव चित्रण हुआ है । प्रेम मनुष्य की जैविक आवश्यकता है और इससे पूर्णत: मुक्ति संभव नहीं है। इससे पूर्णत: मुक्त होना तो विकृति की ओर जाना है । प्रेम मनुष्य जीवन का आधार है जिसकी अभिव्यक्ति समस्त साहित्य में प्राचीन काल से होती आ रही है । युग अनुसार इनके रूप बदलते रहे हैं । निराला ने इनके स्वाभाविक प्रेम को अपने प्रेम के रूप में व्यक्त किया है -

निर्दय उस नायक ने
निपट निठुराई की
कि झोंकों की झड़ियों से
सुंदर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली
मसल दिये गोरे कपोल गोल
चौंक पड़ी युवती
चकित चितवन निज चारों ओर फेर,
हेर प्यारे को सेज-पास
नम्रमुख हँसी-खिली
खेल रंग प्यारे-संग ।

निराला के प्रसिद्ध गीत 'प्रिय यामिनी जागी' में जिस काम-संबंध का चित्रण हुआ है वह दाम्पत्य जीवन का काम-सबंध है। जिसमें सारी शारीरिकता के बावजूद सांस्कृतिकता, पवित्रता और सात्विकता है ।

खुले केश अशेष शोभा भर रहे,
पृष्ठ-ग्रीवा-बाहु-डर पर तर रहे,
बादलों में घिर- अपर दिनकर रहे,
ज्योति की तन्वी तड़ित
द्युति ने क्षमा मांगी ।
हेर डर पर फेर मुख के बाल,
लख चतुर्दिक चली मंद मराल
गेह में प्रिय-स्नेह की जयमाल
वासना की मुक्ति, मुक्ता,
त्याग में तागी ।

प्रस्तुत कविता में निराला के अपनी व्यैक्तिक प्रेम की झलक मिलती है जिसमें उत्तर भारत के संयुक्त परिवार की संस्कृति का रेखांकन भी किया गया है । कविता की भावभूमि एवं उसकी संवेदना को समझने के लिए वहाँ की संस्कृति को समझना होगा अन्यथा कविता की अंत:भूमि तक पहुँचना मुश्किल होगा । इस तरह की व्यक्तिगत प्रेम संबंधी अनुभूति 'प्रसाद' और 'पंत' की कविताओं में भी मिलती है ।

खुले मसृण भुजमूलों से, वह आमंत्रण था मिलता ।

उन्नत वक्षों में आमंत्रक, सुख-लहरों-सा तिरता ॥

पंत के 'युगपथ' की ''तुम मुग्धा थीं अतिभाव प्रवण, उकसे थे अंबियों-से उरोज'' पंक्तियाँ मुग्धा नारी के आंगिक सौंदर्य को व्यक्त करती हैं ।

छायावादी कविता की खाश प्रवृत्ति आत्मा-परमात्मा विषयकता रही है । 'प्रसाद' और महादेवी वर्मा की रचनाओं में विशेष रूप से उल्लखित है । निराला की कविता में अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है । इस दौर में हमारा समाज उतना उन्मुक्त नहीं था जितना कि आज है । रचनाकार प्रेम के भावों को प्रकृति और परमात्मा पर ओरोपित कर निजी भावों को व्यक्त करते थे ।

सहृदय समीर जैसे
पोंछो प्रिय, नयन नीर
शयन-शिथिल बाँहें
भर स्वप्निल आवेश में,
आतुर डर वसन-मुक्त कर दो,
सब सुप्ति सुखोन्माद हो,
छूट-छूट अलस
फैल जाने दो पीठ पर
कल्पना से कोमल
ऋजु-कुटिल प्रसार-कामी केश गुच्छ।
तन-मन थक जायँ ,
मृदु सुरभि-सी समीर में
बुद्धि बुद्धि में हो लीन
मन में मन, जी जी में
एक अनुभव बहता रहे
उभय आत्माओं में,
कब से मैं रही पुकार
जागों फिर एक बार !

'परिमल' काव्य-संग्रह की ''तुम और मैं'' कविता बौद्धिकता से भरपूर होते हुए भी वेदांत के परिभाषिक शब्दों से युक्त है । बँगाल प्रवास के दौरान निराला स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद और गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर से प्रभावित थे । निराला की वेदांत से प्रभावित कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है-

तुम मृदु मानस के भाव और मैं मनोरंजिनी भाषा,
तुम नंदन-वन-घन-विटप और मैं सुख शीतल-तल शाखा
तुम प्राण और मैं काया,
तुम शुद्ध सच्चिदानंद ब्रह्म, और मैं मनोमोहिनी माया ।

भक्तिकाल एवं रीतिकाल के

कवियों की तरह छाया वादी कवियों ने प्रकृति को आलंबन के रूप में भरपूर अपनाया है । स्थान एवं काल के अनुरूप उनकी कविता में प्रकृति के विविध रूपों का वर्णन हुआ है । ऋतुओं के वर्णन में निराला को 'वसंत ऋतु से काफी लगाव है । 'गीतिका' काव्य संग्रह में रंग गई पग-पग धन्य धरा और 'सखि, वसंत आया' आदि कई ऐसी कविताएँ हैं, जिनमें प्रकृति के मनोरम दृश्य उपस्थित हैं । और साथ ही उनकी व्यक्तिगत प्रेम संबंधी अनुभूतियाँ भी जुड़ी हैं ।

रंग गयी पग-पग धन्य धरा,
हुई जग मग मनोहरा।
इसके साथ ही
गोरे अधर मुसकाई
हमारी वसंत विदाई ।
अङ्ग-अङ्ग बलखाई
हमारी वसंत विदाई ।

'फूटे हैं आमों में बौर, भौंरे वन-वन टूटे हैं,' 'खेलूँगी कभी न होली, उससे जो नहीं हमजोली' आदि रचनाएं उनके प्रकृति प्रेम को दर्शाती हैं ।

'निराला' की रचनाओं में प्रकृति के स्थिर और गतिशील दोनों प्रकार के संश्लिष्ट चित्र उपस्थित हैं । इन चित्रों में उनके इंद्रियबोध-रूप, रस, रंग, गन्ध, स्पर्श और ध्वनि की तीव्र-सूक्ष्म संवेदनात्मक अभिव्यक्ति पायी जाती है । निराला के प्रकृति विषयक रति के इतने विविध रूप हैं कि उनको यहाँ सीमित कर पाना अपने आप में एक चुनौती भरा कार्य होगा । प्रकृति के आलंबन उद्दीपन एवं मानवीकरण आदि रूपों की भी विवेचना हुई है ।

समाज एवं राष्ट्र के प्रति सच्चा दर्द निराला की कविताओं में मिलता है । जहाँ 'प्रसाद' की राष्ट्रीयता ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हमारी सांस्कृतिक चेतना को जागृत करती है वहीं पर निराला की कविताएँ समाज एवं देश की वास्तविक स्थिति का चित्रण करते हुए हमें कुछ करने के लिए ललकारती हैं । 'तोड़ती पत्थर', 'विधवा', 'वनबेला', 'कुकुरमुत्ता', 'बादल राग' और 'सरोज-स्मृति' आदि ढेरों कविताओं हैं जिनमें समाज एवं राष्ट्र की वेदना एवं करूणा छिपी है ।

अतीत-स्मरण के माध्यम से राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना की 'यमुना के प्रति', 'जागो फिर एक बार', 'महाराज शिवाजी का पत्र', 'तुलसीदास', और 'राम की शक्ति पूजा' आदि लंबी कविताएं निराला की सांस्कृतिक भावभूमि एवं उनकी निजता को व्यक्त करती हैं ।

निराला की कविता में समाज के समान्य मानव की प्रतिष्ठा का सायास प्रयास मिलता है । 'नये पत्ते', 'बेला', 'सांध्यकाकली' में संकलित असंख्य कविताएं दलित, निरीह और उपेक्षित व्यक्ति को प्रतिष्ठित करती हैं ।

निराला मानवीय समता और समानता में विश्वास करते हैं । रंग-भेद, संप्रदायगत व जातिगत विषमता के वे कट्टर विरोधी हैं । वे सामाजिक मुक्ति और आर्थिक मुक्ति के सवाल को बार-बार उठाते हैं । महाजनी सभ्यता के विरोधी निराला नारी के प्रति उदात्त दृष्टिकोण रखते हैं । निराला के काव्य में दलितों के उत्थान और उनके प्रति सद्भाव के स्वर की अनुगूंज बार-बार हुई है । उनकी 'बेला' नये पत्ते की रचनाएँ तो इसका प्रमाण हैं ही 'गीतिका', 'अर्चना' और आराधना जैसे संकलनों में भी ऐसी एकाधिक कविताएं हैं, जबकि इन कृतियों में भक्तिपरक गीतों की अधिकता है ।

राष्ट्रीय चेतना को जगाने के लिए निराला ने भारत के पौराणिक काल के वैभव का बड़ा मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है । जैमिनी, पंतजलि, और व्यास जैसे ऋषियों, राम, कृष्ण, भीम, अर्जुन जैसे महामानवों का स्मरण कर निराला ने सुप्त मानवता को जगाने का सार्थक प्रयास किया ।

निराला की काव्य संवेदना का फलक बहुत व्यापक है, जिसमें उनकी आत्मचेतना, वैयक्तिक जीवन की अनुभूतियाँ, समसामायिक परिवेशगत जीवन और तत्कालीन परिस्थितियाँ आदि समाहित हैं । निराला ने मुक्त छंद में रचनाकार और रोमानी भावों को मुखर रूप देते हुए शोषितों के प्रति जिस अनुराग को दर्शाया वह अपने आप में एक युग प्रणेता के कार्यों से कम न था । निराला हिंदी साहित्य के युग पुरुष हैं जिन्हें सदियों तक भुलाया नहीं जा सकता ।

रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
गोवा विश्वविद्यालय